Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

महिला शिक्षा विकास : डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के योग्यदान

रमेश कुमार भटट्

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान संकाय, के0 एस0 जी0 एम0 कॉलेज निरसा, धनबाद।

Article Info

Publication Issue :
Volume 6, Issue 1
January-February-2023
Page Number : 28-31

Article History
Accepted : 01 Feb 2023
Published : 25 Feb 2023

शोधसारांश– आज के समय महिलाओं के शिक्षा को लेकर समाज में जो बंराईयां थी ओ धीरे–धीरे कम होती जा रही हैं। अतः फिर भी आज समाज में महिलाओं के शिक्षा को ले कर कुछ लोगों के मन में गलत धारणाएं बैठी हैं आज हमारी लड़किया शिक्षा को लेकर काफी प्रत्यनशील हो चुकी हैं। जो हर क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त कर रही हैं। इससे पता चलता है कि हमारे समाज में महिलाओं के दबा कर रखने के बाउजुद भी वे अपनी मेहनत से हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। भारत में महिला शिक्षा के विकास को प्रतिबंधित करने वाले कारक मुख्य रूप से सामाजिक हैं। अगर हम सामाजिक आर्थिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उन्हे पहचानने और उन्हे खत्म करने की आवश्यकता हैं।

मुख्य शब्द– महिला, शिक्षा, भारत, डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन, विकास, समाज।

भारत में महिला शिक्षा विकास की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। वेद काल में भी महिलाओं को पुरूषों के बराबर शिक्षा के अवसर प्राप्त थे। एक आकलन के अनुसार वेद की रचनाओं में से 60 प्रतिशत मंत्रों की रचना महिला ऋषियों द्वारा की गई हैं।

देश और समाज में प्रेम सद्भाव और सामंजस्य की स्थापना के लिए डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन महिलाओं को यथोचित सम्मान देने की बात कहते हैं। उनका कहना हैं कि यदि समाज में महिला और पुरूष के बीच भेद भाव की लकीर खीचीं होगी तो महिला शिक्षा विकास की कल्पना संभव ही नही हैं। उनके अनुसार आदिकाल से हिन्दुस्तान में महिला को भोग के बजाय सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। यही कारण था कि देश और समाज प्रगति की पराकाष्ठा तक पहुॅच चुका था। धर्मशास्त्रों और विभिन्न ग्रंथो में महिला को पूजा और उपासना के योग्य समझा जाता था। उन्हे शिक्षा –दीक्षा आदि प्रदान करके बौद्विक क्षमता का विकास किया जाता था। तभी देश और समाज एक प्रगतिशील राह की ओर चल रहा था।

सन् 1953 ई0 में सर्वपल्ली राधाकृष्णन शारदा देवी स्मारक ग्रंथ की रचना में भारतीय महिला की अवस्था का स्पष्ट चित्रण करते हुए प्रस्तुत किया हैं– भरतीय परंपरा में महिलाओं को प्रायः सम्मान की दृष्टि से देखा गया है पर कभी–कभी उनके लिए असम्मानसूचक वाक्यों का भी प्रयोग किया गया हैं। ईश्वर को यहॉ

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Shauryam Research Institute. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अर्धनारीश्वर कहा गया हैं अर्थात आधा पुरूष और आधा स्त्री माना गया है। मनु ने कहा है कि जहां नारी की पूजा होती हैं, वहां ईश्वर प्रसन्न होते हैं और जहां स्त्री का अनादर होता हैं, वहां सारे कार्य असफल होते हैं।

उनका कहना है कि शिक्षा विकास का जो कार्य मर्दो को हैं वही औरतों को भी हैं। बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के लिए अवसर देने में जैसे हम पुरूष पर ध्यान नही देते उसी प्रकार महिला पर भी ध्यान नही देना चाहिए। हमारे नर होने का हमारे लिंग–संबंधी भेदों की अपेक्षा कही अधिक महत्व है। सभी मानवों के अन्दर उनका लिंग चाहे जो भी हो पार्थिक और आत्मतत्व का ससीम और असीम का वही नाटक चलता है।

ऐसे जो काम नर करते हैं वह काम महिला नही करती। इस तरह दोनों के आकृति में अन्तर आ जाता है, पर यह सही नही हैं कि वह कर नही सकती और हम उनहे हीन समझें।

300ई पूर्व से ही महिलाओं के शिक्षा को परूषों के समान शिक्षा देना हर माता–पिता का कत्तर्व्य माना जाता था। उन्होने कहॉ हैं कि कन्या के पालन पोषण और शिक्षा में बड़ा प्रयत्न और सावधानी से करनी होगी। हमारे इतिहास के कुछ युगों में नारी – शिक्षा दुर्भाग्य से उपेक्षित रही जिससे महिलाएं निरक्षर और अंधविश्वासी बनती गई।

स्वामी विवेकानंद ने भगिनी निवेदिता को पत्र मे लिखा कि भारत की कर्मभूमि में तुम्हारे लिए बड़ा उज्जवल भविष्य हैं आज यहॉ जरूरत है एक महिला की पुरूष की नही, जो भारतीयों खासतौर से महिलाओं के लिए काम करने में सचमुच एक सिंहनी हो। उन्होने कहॉ अभी भारत महान नारियों को जन्म देने की स्थिति मे नही हैं। उसे महान नारियों को अन्य देशों से उधार लेना होगा। स्वामी विवेकानंद का कहने का तात्पर्य यह था कि पिछले कुछ वर्षो से भारतीय महिलाओं की अवस्था बहुत निम्न हो गई हैं। कई दिनों से हम यह भूल गये है कि महिलाएं भी मनुष्य हैं अगर मौका मिले तो वह भी बड़े बड़े काम सफलतापूर्वक करने में पिछे नही होगी। अतः हमारा समाज महिलाओं की प्रतिभा को अनदेखा करते आया हैं।

महिला शिक्षा विकास में जागृति :– आज कल जो महिलाओं में जागृति दिख रही हैं उसका श्रेय रामकृष्ण आंदोलन को तथा महात्मा गॉधी के परिश्रम को जाता हैं। रामकृष्ण का नारियों के प्रति कितना भान था, इसका पता शारदा देवी और अन्य महिलाओं के साथ उनके व्यवहार से चलता हैं। गॉधी जी ने कई नारियों को देश की राजनीतिक स्वतंत्रता के युद्ध में लगाया । इससे भारतीय महिलाओं की मुक्ति का बोल मिला। हमारे भारत देश के पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई थी जो कभी हार नही मानी उनकी मदद से कई लड़कियों ने शिक्षा प्राप्त की। वे अंतिम सांस तक महिलाओं के शिक्षा विकास को लेकर संघर्षरत रही। आजादी के बाद हमारे देश में महिलाओं के शिक्षा दर काफी कम था। 1958 में भारत सरकार ने महिला

शिक्षा पर एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया, इस का सार यह था कि महिला शिक्षा को भी पुरूष शिक्षा के सामानांतर पहुॅचाया जायें।

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने महिलाओं के उत्थान के लिए प्रयत्न करते रहे उनका विचार था कि आदर्श महिला प्रेम की प्रतिक हैं जो हमें खीचकर उच्चमत स्थिति की ओर ले जाता हैं हमें नारी को केवल आनन्द का साधन नही समझना चाहिए। यह सच है कि वह नारी हैं वह सहायता करनेवाली भी हैं। परन्तु सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण वह एक मानव प्राणी हैं। उसके साथ पवित्त्रता और रहस्य जुड़ा हुआ हैं। यदि हम उसे केवल गृहिणी या माता बना देते है और उसका स्तर घटाकर उसे सामान्य बातों की सेवा में लगा देते हैं, तो उसका सर्वोत्तम अंश अभिव्यक्त नही हो पाता। इसलिए प्रत्येक महिला को अपनी आवेश की आग को, आत्मा के उत्तारण को और मन की ज्वाला को विकसित करने का अवसर मिलना चाहिए।

महिला शिक्षा विकास का महत्व :

1. जिस प्रकार जीवन जीने के लिए किसी व्यक्ति को ऑक्सीजन की आवश्यकता होती हैं उसी प्रकार किसी देश को अगर विकसित करना हैं तो सबसे पहले वहां की महिलाओं का शिक्षित होना बहुत जरूरी हैं।
2. अगर महिलाएं शिक्षित होगी तो वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगे जिसके कारण वे समाज में क्षेत्र मे आगे होंगे।
3. महिलाएं पढ़ी लिखी होंगी तो समाज का सामाजिक स्तर सुधरेगा क्योकि एक बच्चे की पहली गुरू महिला ही होती हैं अगर वही से बच्चो को अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ तो हमारे समाज का सामाजिक स्तर स्वतः ही अच्छा हो जाएगा।
4. शिक्षित महिला होने से देश का आर्थिक विकास होगा साथ ही परिवार का रहन–सहन भी अच्छा होगा।

उद्धेश्य :– महिला शिक्षा परिवार में विनम्रता और सहनशीलता प्रदान करती हैं बल्कि समाज और देश में सामाजिक और आर्थिक मजबूती को सही दिशा देती हैं। सरकार को महिलाओं के विकास के लिए बेहतर विद्यालय और विश्वविद्यालयों का निर्माण करना चाहिए ताकि महिला शिक्षा को मजबूती मिल सकें।

1. जीवकोपार्जन हेतु व्यावसायिक शिक्षा देनाः
2. सामाजिक व सांस्कृति प्रसार का स्त्रोत बनानाः
3. महिलाओं को सर्वांगीण व्यक्तित्व विकासः

समस्या :

1. गॉवों मे महिला शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए।
2. महिलाओं के पाठयक्रम को उनकी मूल आवश्यकताओं और रूचि के अनुकूल शिक्षा देनी चाहिए।

3. केन्द्र सरकार को देश की प्रमुख समस्याओं मे महिला शिक्षा को प्रमुख स्थान देना चाहिए।

समाधान :

1. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षा के प्रचार प्रसार कर उन्हे जागरूप करना होगा और हर गॉवों मे बालिका विद्यालयों की स्थापना पर जोर देना होगा।

2. महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने को प्रोत्साहित करने के लिए मितव्ययी छात्रावासों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

3. महिलाओं मे शिक्षा विस्तार करने के लिए संगीत, हस्तशिल्प, गृह विज्ञान, सिलाई कढ़ाई आदि विषयों को ध्यान में रख कर जागरूप करना होगा।

निष्कर्ष : आज के समय महिलाओं के शिक्षा को लेकर समाज में जो बंराईयां थी ओ धीरे–धीरे कम होती जा रही हैं। अतः फिर भी आज समाज में महिलाओं के शिक्षा को ले कर कुछ लोगों के मन में गलत धारणाएं बैठी हैं आज हमारी लड़किया शिक्षा को लेकर काफी प्रत्यनशील हो चुकी हैं। जो हर क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त कर रही हैं। इससे पता चलता है कि हमारे समाज में महिलाओं के दबा कर रखने के बाउजुद भी वे अपनी मेहनत से हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। भारत में महिला शिक्षा के विकास को प्रतिबंधित करने वाले कारक मुख्य रूप से सामाजिक हैं। अगर हम सामाजिक आर्थिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उन्हे पहचानने और उन्हे खत्म करने की आवश्यकता हैं।

संदभ सूची :

1. जे0 से0 अग्रवाल, भारत में नारी शिक्षा – 2009

2. एम0 आई0 राजस्वी, सर्वपल्ली राधाकृष्णन – 2019

3. डॉ एस0 गोपाल, रचनात्मक जीवन – 1979

4. अशोक कुमार वर्मा, प्रारम्भिक समाज – 1999